



प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

— सम्पादक

प्रश्न:- अमृतवेला अच्छा हो उसके लिए क्या करें?

उत्तर:- बाबा के महावाक्यों के अनुसार ही यह जीवन-यात्रा बीते, कभी भी कोई घड़ी निष्फल न जाये, नहीं तो अच्छी नहीं रहेगी जीवन-यात्रा। मैं याद की यात्रा पर हूँ, ऐसी याद हो जो पीछे न देखें। याद की यात्रा माना याद में रहना, चलते चलना, पीछे न देखना, पयूचर का फिक्र नहीं करना। एक बल, एक भरोसा माना भरोसे से बल मिलता है। हो जायेगा, बाबा बैठा है, यह भरोसा है। भावना का भाड़ा मिलता है, निश्चय में विजय है। बाप के संग से ही हम आगे चले हैं और हम बच्चों का भी आपस में संग है। सेवा भी आपस में मिल करके करते हैं तो उसका भी बहुत बल है। संग में रहना है सेवा के निमित्त, बाकी सारा दिन मैं क्या करती हूँ? मुझे पास विद ऑनर में आना है, अच्छी मार्क्स लेनी हैं, यह ध्यान रखना है। दिनभर में जो कुछ भी हुआ रात को एकदम समेट के सोयेंगे तो अमृतवेला अच्छा

होगा। रात को कोई न्यूज़ देखके या अखबार पढ़के सोयेंगे तो क्या होगा? इसलिए रात को बाबा को सब सुनाके, अपने ऊपर दया, कृपा, रहम करके सो जाना है। अपने ऊपर दया करने से बहुतों से आशीर्वाद मिलेगी। बाबा की कृपा से सुख घने पायेंगे। ऐसे रहमदिल बाबा को बहुत याद करना है, आपस में अच्छी तरह से मिलो, बाबा की अच्छी-अच्छी बातें सुनाओ और सुनो।

प्रश्न:- पुरुषार्थी जीवन में सबसे बड़ी कमी कौन-सी है?

उत्तर:- जिसको पक्का योगी बनना हो तो कभी किसी की कोई कमी न देखे। थोड़ी भी किसकी कमी देखी तो पक्का बनने नहीं देगी। कमी देखना और सुनना या बोलना, यह आदत हमको सम्पन्नता के समीप नहीं ले जा सकती है। अभी बाबा हमको बड़ा स्नेह देते हैं इसलिए सम्पन्न बनना इजी लगता है। कोई चाहे तो बाबा के स्नेह की शक्ति से, अपने को सम्पन्न बना सकता है। कमी देखने से होगा क्या?

और ही वेस्ट थॉट चलेंगे इसलिए सब बहुत अच्छे हैं।

प्रश्न:- आपने “थिंक लेस, डू मोर (सोचो कम, करो ज्यादा)” विषय पर भाषण में क्या सुनाया?

उत्तर:- किसी भी प्रकार की ज़रा भी सोच (चिन्ता) में होंगे तो हमारी वृत्ति, दृष्टि बाबा समान नहीं हो सकती है। इतना सब ठीक हो गया है तो आगे भी सब ठीक होगा ही, अन्दर से यह विश्वास सोचने नहीं देता है। बाबा में विश्वास, ड्रामा का हर दृश्य कल्याणकारी है, इसमें विश्वास है। सारे जीवन में मैंने समय, पैसा, शक्ति व्यर्थ नहीं गंवाया है, तो भगवान खुश, हमारी दादियाँ भी खुश तो हमारे सेवासाथी भी खुश, सब मेरे से खुश, वह शक्ति काम कर रही है। थिंक लेस से सोल एनर्जी बढ़ती है। ज्यादा क्या सोचना है, आपने कहा, मैंने माना, आपस में सम्मान है ना। आज योग नहीं लगा, आज यह काम नहीं हुआ, मुश्किल है, ये शब्द मुख से निकलें, अफसोस है। नहीं, सब सहज

है। हम जितना बाबा की बातों पर अटेन्शन रखते हैं उतना बाबा भी हमारा ध्यान रखता है, उतना पौ-बारा है। पौ-बारा माना अच्छे स्टूडेंट बन, अच्छी स्टडी कर टीचर का ध्यान अपने ऊपर खिंचवाना, पर्सनल ऐसा हमारा जीवन हो। बाबा देखते हैं कि इसका ध्यान अपने ऊपर अच्छा है। तो बाबा चारों सबजेक्ट में साथ देता है। ज्ञान बाबा का दिया हुआ है, और कहाँ से लाया नहीं। यह ज्ञान जब तक मंथन न करूँ ना, तो लगेगा जैसे रूखी-सूखी रोटी खा ली। ज्ञान इतना अच्छा है जिससे योग लग जाता है। धारणा जीवन में आपेही आ जाती है, सेवा हो जाती है। तो ज्ञान मंथन की बहुत वैल्यू है। मंथन करने में, सोचने की थोड़ी भी ज़रूरत नहीं है। इसमें सबका सहयोग अच्छा मिल रहा है तो सब काम अति सहज हो रहे हैं।

प्रश्न:- कहीं जाना होता है तो उसके लिए कुछ तैयारी तो करनी पड़ती है ना, तो उसमें कैसे कह सकते हैं कि डोंट थिंक?

उत्तर:- अगर मेरे को सोचने की आदत होती ना तो मेरे जितनी कोई यात्रा कर न सके। समेटने और समाने की शक्ति न होने के कारण कहेंगे, मुझे तैयारी करनी है, समय चाहिए। यह आवाज़ ऐसा होता है जैसे गृहस्थी का। कइयों की सोचने की आदत होती है। हमें एक मिनट में पता है, यह

घर का कपड़ा है, यह बाहर का कपड़ा वा चप्पल है। बैज भी हमारा कभी गुम नहीं हुआ होगा, कभी टूटा नहीं होगा। वास्तव में हम सदा ही तैयार हैं। क्या करना है, दो रोटी ले करके जाना है, बस। मुझे रोटी बनानी है, मुझे खानी है, यह आदत है तो इसको सीधा ही कहा जाता है गृहस्थी नेचर। जो एकदम हल्का है उसे जल्दी तैयार होने में सहयोग मिल जाता है। आवाज़ में आयेंगे तो सामने वाले भी कहेंगे, इतना टाइम लगेगा क्या तैयारी करने में! लेकिन यह ध्यान रखो, जैसा कर्म मैं करूँगी मुझे देख और करेंगे।

प्रश्न:- कोई भूल हो जाए तो क्या करें?

उत्तर:- कुछ भूल होती है तो जो श्रीमत पर चलने वाले हैं उनको सुना दो। यह तो जानते हो ना, श्रीमत पर कौन चलते हैं? साकार बाबा को कोई पत्र में सच बताता था, तो बाबा ऐसे पत्र उठाके पढ़ते भी नहीं थे, सेकेण्ड में कहते थे, बच्चे, भूल जा। फिर से नहीं करना। अगर अभी भी फिर-फिर भूल करते रहेंगे, बतायेंगे नहीं तो पद भी कम, सज़ायें भी ज्यादा, संगमयुग का जो अमूल्य समय गंवाया तो पश्चाताप बहुत करना पड़ेगा। ऐसी घड़ी अच्छी नहीं, तो अपने ऊपर मेहरबानी करो, पश्चाताप की घड़ी न आवे इसके लिए सेल्फ रियलाइजेशन

से रियल्टी की रॉयल्टी में रहें। अपने ऊपर रहम भावना से, 'यह अच्छा नहीं करता', यह ख्याल आने नहीं देती हूँ। हाँ, यह भावना रखती हूँ कि आज नहीं तो कल अच्छा करेगा, भले समय लगेगा। दूसरा, अगर मैं ये कहूँ कि आपके साथ नहीं निभा सकती हूँ तो दोष किसका? इस प्रकार का जो ख्याल आता है, उससे हिसाब-किताब बन जाता है। आजकल ज्ञान मोटे रूप में सबके पास है, पर महीन रूप में 'इन के साथ नहीं चल सकता/सकती हूँ', थोड़ा समय साइलेंस में जाके विचार करो, यह शब्द किसके मुख से निकल रहा है? सबका दोष इकट्ठा करके, अपने को सही समझ कर कहना, मैं नहीं चल सकती हूँ। 'दूसरे को बदलना चाहिए' क्या इस प्रकार की थिंकिंग योगी की है? औरों का दोष देखने से अपने को फ्री करो, तो जो बाबा ने बोला, 'वृत्ति से सेवा करो' वो हो सकेगी।

प्रश्न:- चारों सबजेक्ट में से आपका मनपसन्द सबजेक्ट कौन-सा है?

उत्तर:- चारों ही।

प्रश्न:- आपकी खुद की विशेषता क्या है?

उत्तर:- जो बाबा ने दिया है वह सबको मिले।

प्रश्न:- आपका मनपसन्द गुण कौन-सा है?

उत्तर:- दे दान, छूटे ग्रहण।